सं ग्रो॰ वि॰/एफ॰डी॰/83-86/23665 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ साहनी सिल्क मिल, 13/7, मथुरा रोड़, फरोड़ाबाद, के श्रमिक श्रो॰ नैपाल विह, मार्फत सोड़ ग्राफित, 2/7, गोपी कालौनी, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीबोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की जूप-धारा (1) के खण्ड (ग्) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम त्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला कि स्वायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतुं निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

. क्या श्री नेपाल सिंह की सेवाध्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं अो वि । एफ.डी. /21-86/23673. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अरीहण्ट इण्डस्ट्रीज, संजय में मोरियल इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, ज्लाट नं 0.15, 20/2, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के अमिक श्री दिनेश चौधरी, पुत श्री राम बहादुर चौधरी, ग्राम चहुरा आनं दपुर, भो अहियारी थाना कमतोल, जिला मधुबनी (बिहार) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधितयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415—3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधित्यम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिणय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री दिनेश चौधरी की सेवाग्रों का समापन व्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं श्रो वि । रोहतक / 2 2-86 / 23712 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं श्री राम सैथेटिक्स फेब्रिक्स, बहादुरगढ़ (रोहतक), के श्रीमक श्री राम सिंह, मार्फत एस ० एस ० एफ ० वर्कर यूनियन (इंटक), बहादुरगढ़, रोहतक, तथा उस के प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वौछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठितियम, 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रिष्ठसचना की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राम सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस् राहत का हक्तदार है ?

## दिनांक 10 जुलाई, 1978

सं० श्रो०वि०/एफ०डी०/46-86/23850.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इण्डियन हाईवेयर इण्डस्ट्रीज लि॰, हाईवेयर चौंक, एन०श्रस॰श्राई०टी॰, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री बाम देव पाण्डे, मार्फत महा सचिव, इंटक जिला परिषद, 1-ए/119, एन०श्राई०टी॰ फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिव्ययों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3 श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री वाम देव पान्डे, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भ्रो.वि./एफ.डी./गुड़गांव/37-86/23857. — चूंकि हरियाणा के राज्यपान की राय है कि परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डोगढ़, (2), जनरल मैनेजर, हरियाणा रोडबेज, रिवाड़ी, के श्रीमिक श्री सूबे सिंह पुत्र श्री ग्रामर सिंह गांव भिहोली, तहसील नारनोल (महेन्द्रगढ़) तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते.हैं ;

इसलिए, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, को धारा 10 को उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जो-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना की द्वारा 7 के अधीन गठित अम. न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला हैं :--

क्या श्री सूबे सिंह पुत्र श्रो ग्रमर सिंह का सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नही, तो वह किस राहत का हकदार है ?

. सं श्रो. वि./एफ.डो./गुडगांव/5-86/23865.— चूं कि हिर्याणा के राज्यान की राय है कि . परिवहन आयुक्त, हिर्याणा रोडवेज, चण्डोगढ़, (2) जारत नैतेतर हिराणा रोडवेज हिराणा हो के प्रतिक श्रोहिताण सिंह, पुत्र चन्दगी राम गांव व डा० रूखी, तह. गोहाना, (सोनोपत) तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलें में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हिरियागा के राज्यशल इसके द्वारा, सरकारी श्रिधिस्चना सं०, 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिस्चना सं. 11495-जो-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिस्चना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायात्र, करोशाया, को बिद्धारण या उनने तुनगर या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवत्यकों तथा श्रीनक के बीच या तो विवाद ग्रस्त मामला है या विवाद से स्संगत श्रयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री दिलबाग सिह, पुत्र श्रो चन्दगो राम को सेत्राग्नों का समापन न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो बह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि । (एफ.डी.) 122-85 | 23873 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि चैयरमैन मार्किट कमेटी गुड़गांव, के श्रीमक श्रीमती धकेती देवो मार्कत कैमहावीर त्याणी, इन्टक यूनियन, गुड़गांव, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रींद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पड़ते हुए ग्रधिसूचना सं 11495-जो-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त तथा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :—

क्या श्रीमती धकेली देवी की सेवाग्रों का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?